

सिने-याग (१)



BY AIR MAIL

Mr. S. H. Raza
101 Rue du ~~Couvent~~ Charonne
2. cite du couvent-
75011 PARIS
France



200

भारत
INDIA



100

भारत
INDIA



भारत
INDIA 25

From -

O.P. Chauraiya

Lalit Kala Bhawan

Rajore Marg. Bhopal - 462003 - India

FROM -

S. NAGDEV

5/127 RAVISHANKAR NAGAR

BHOPAL - 462016

INDIA

BY AIR MAIL
PAR AVION
हवाई डाक से

BOOK POST



To,

Mr. S.H. RAZA

101, RUE DE CHARONNE

2, CITE DU COUVENT

750011

PARIS.

FRANCE

from
SURESH CHOUDHARY

19/24 North T.T. Nagar

Bhopal - 462003

M. P.

INDE

068



BY AIR MAIL
PAR AVION

To

Mr. S.H. RAZA
101, RUE DE CHARONNE
2, CITÉ DU COUVENT
75011 PARIS

FRANCE



5 भारत INDIA



100 भारत INDIA



200 भारत INDIA

S. Choudhary
19/24 North T. T. Nagar
Bhopal - 462003
M.P. INDE

Pushes
table Mary et
2 Photo. Billy

Paris 10 mai 1989

प्रिय डेविड

इसी शाम वेबिल पर बैठकर, गहरी बातें
सँसार सांके हैं, लिख रहा हूँ। आज बड़ी
याद आ रही है, क्योंकि कई दिनों से कोई
समाचार नहीं मिला है और आज रात के कई
भारतीय मित्र का आह्वान है।

मैंरा पिक्ला पत्र मिला होगा / अब्बारा फाले ती श्रु
बाधे होंगे। कि भी पाइया कि एक अपने विचार लिख
सके। मात भक्त कैसा है, यंत्र कैसा है, महिला कैसा है,
और प्रवेश के आदि वास्तव्य का करना संग्रह... आदि आदि

आर एक Push-Cutting त भेजते तो सांस लेना भी
कश्किल लगता

बहुत याद आ रहे हैं - (ग)

आदरणीय स्था (गं.)

मोहम्मद

12 फरवरी-1982.

प्रिय युवा

दोस्तों की शाह-को भारत भवन जाना दो- रहा
है- सुबह भी- अभी- वहीं से आ रहा है आधिस-
में बैठे- कर आपको- लिख- रहा है। मोक्ष वामा- भद्र-
मामाग प्रती- दो- युवा है, स्वामी- गायन- जी- और-
श्री वृष्ण- स्वका- न- पुत्र- रूप- से- उसे ही- सम्मान-
है। भारत- कार्य- सेवक- है- मन्मथ- सभी-
पेरिज- का युद्ध है- दीवारों- पर उभरे- रख- दिये-
गये- है- अब केवल- श्री- बाल- छात्र- और-
अन्य- परम- श्री- उन- सभी- पेरिज- को-
अपने- अनुसार- दिख- रहे- हैं (सभी- भागों- को-
बाहर- कर) होना भी- चाहिये- अन्यथा- लड़ी- मुश्किल-
हो- जाती- है। इन-को- आदर- का युद्ध है-
और- आते- जा रहे- हैं। श्री- गायत्री- परम- युवा-
शेख- मन्मथ- गोड- भी- पुत्र- और- भी- है-
शायद- भारत- में- इस- लड़ी- विशाल- पुरानी-
वही- नहीं- लगी- होगी- जिस- में- इन-के- अविद्ध-
लड़क- लड़े- लड़े- बाल- बालों- के- महत्व- प्रती-
चिह्न- मंग- रहे- हैं। यह- आयोजन- यह- विचार-
इस- प्रती- होने- की- संतुष्टि- इस- लड़ी- कुछ- लड़ी-
जा- है- दि- वर-

नई दुनिया की दृष्टि- संलग्न- है।

मन्मथ- गोड-

कुछ दुपला नहीं है। और चाहता हूँ कि तुम यह पत्र बता सकें, वन्दना को, नाबोद्व को, और प्रकाश, अरुण को, और मन्मथा को भी। शायद समय न मिलेगा कि मैं इसे लिख सकूँ। मिदगा में कभी वक्त मसरफ नहीं रहा।

एक ह आरजू है। पूरी कर सकेंगे। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे लिये हर दिन, आज से, दैनिक समाचार - "नई दुनिया" के अधिक से अधिक लेख जो आत मकर या संस्कृति को सम्बन्ध रखते हैं, लरीद लो और केवल लेख - दो अंक नही - मुझे हर तीन दिन हवाई ग्राहक पोस्ट से भिजाओ। जो भी खर्च होगा मैं मनीआडर से तुम्हें पूरा भिजाऊँगा। कैसे तो अशोक जी Catalogue - विशेष अंक तो भिजवाये हैं, या दो समाचार पत्र चाहता हूँ। और जब भी हो सके पत्र लिखो, इसी में किसी हद तक मैं मिलूँगा।

सचिदा से कहें, मैं इसे लिखूँगा। इसी है इसे जापान में सफलता मिली और कुछ शान्ति से काम कर रहे हैं। इसे और समाचार दें, और कहें भी कि, जब याद आयें, मुझे लिखें। मैं भी लिखने की कोशिश करूँगा। और प्रकाश, अरुण - मन्मथा को भी यही कहना।
बस आज इतना ही। तुम्हें और वन्दना को सह। लिखें, जो मग में आयें लिखें, अगर इस समय, ज्यादा से ज्यादा और बार बार

उपपलब्ध
जयपुर ११.१२.५१
वर्षे समाचार और लेख

S.H. RAZA

101, RUE DE CHARONNE

2, CITÉ DU COUVENT

75011 PARIS

TÉL. 370-97-64

Paris, 8th February, 1982.

आई एड्रेस -

कुछारे दो पत्र मिले थे। इस बार देर से लिखने का कारण व्यस्तता ही न थी, और भी कुछ। किस तरह लिखूँ, निर्णय न कर पाने के "संकट" में बेचैन रहा हूँ।

आने की बड़ी इच्छा थी। आने की बड़ी इच्छा है, पर ऐसा ही लगता है कि आना न हो सकेगा। आशोक जी ने कड़े इशारा से पत्र लिखे हैं, तीन बार भी आये हैं। मैंने भी जवाब दिया है, शायद कुछे आलस हो गया होगा बहुत अफसोस है, आत भवन के उद्घाटन के समय आना न हो सकेगा।

बहुत जरूरी है कि यही हूँ और कार्य जारी रखूँ। कुछ ऐसा आहल है, चित्र अच्छे बन रहे हैं। मेरे व्याल से दिव्य, उत्कृष्ट शक्तियों से ही वतावाण बनता है। इनकी इच्छा का सहारा लेना है। एक समय एक ही समय है, कि नहीं आता है। इसके अलावा भाग्य से काफ़ी नियंत्रण सामने है, और चाहता हूँ अपना काम सारी शक्तियों से कर सकूँ। India Triennale के चित्रों के बाद, London Festival, आई में Stockholm, Sweden में International Art Festival, एक Album, Grenoble में, प्रदर्शनी आई में Ardenk मध्य फ्रांस, और आस्ट्रिया में जनी Berne - Switzerland. कि Salon de Mai, Espace Cardin ... और बहुत कुछ और ...

चाहूँगा कि नेपाल आऊँ, उदरुनी चैन पाकर अपने कार्य का अच्छी तरह पूरा करूँ। दो दिन के लिये नहीं - पूरे एक माह के लिये, और इसी आशा में कि सब से दिल से मिल सकूँ, अपने बचपन तक कि से पहुँच सकूँ।

कम दुल्लो हूँ, चित्र भी। पा जाने की, अभी ही एक मोटे कम्बल से सिर ढक रहा हूँ, कि कोई मेरे आँख न देख सकें। कि (भी) कसे

મોપાલ
૧૬ અપ્રેલ ૧૯૮૧

उद्देशीय - रक्षा सा.

уоллн-

आपका 9 अप्रैल का पत्र प्राप्त हुआ। हाँ- मैं निश्चित नहीं कर पाया था कि वह पत्र भी आपको पोस्ट करूँ या नहीं, जैसे कि कई और पत्र अपने-अपने-अंतर की कधीरता, ~~मैं~~ मैंने केनी और पुस्तकालय के लम्हों में मिला मिला कर ~~आपकी~~ शर्त और संकोच से गर्म संसों की तरह सहेज-कर रखना रहा। इस बार नहीं रोक् पाया, और देर से ही लेकिन मैं पोस्ट कर चुका था। शर्मादाँ हूँ कि आपको परेशान करा। फिर भी —

आपने-बीक-समाप्ता " मानवीय-स्तर-पर " बहुत से ऐसे-
 नायक-कोरे-कस-संग-कोरे-हैं-जिनका-बधा-जाना-संभव-
 नहीं-होता, कोरे-अनबधा-रहना-कोरे-भी-अधिक-पीड़ादायक-
 रोक-नहीं-पाया-हैं-अपने-आपको-रिसने-से-। ऐसी-ही-
 स्थिति-में-कोरे-भी-अधिक-विचलित-हो-गया-या-अधस्तात-
 हो-होगा-शायद-कि-किसी-गंभीर-बीमारी-से-पीड़ित-न-
 नहीं-हो-गया-? अंधकार-कोरे-गहराई-ही-नजर-आती-रही-
 असीम-कोरे-असीम-वही-कोई-सहारा-नहीं-अपने-आपको-
 खोने-वा-उर-अपने-लिये-नहीं-दूसरों-के-लिये, और-फिर-
 इस-बीच-न-मानून-क्या-क्या-घटित-हुआ-कि-मैं-पूछिका-
 से-आश्वित-हो-गया-।

है मैंने, और शायद आपका रहूँ। आपका पत्र ने एक
नया जगत सारा, दृढ़ इच्छा शक्ति और विश्वास दिया है।
ऐसे गायक वक्ता मैं।

आप-नों पर रहा हूँ। आपोश, अपने से ही है
बहुत अधिक इतना-इतना कि पर-पड़ने की सीमा
का लगभग अंत ही हो-आर नहीं पर-रहा, इसी-से-
ही पायः नये केनवास पर प्रीज हो जाता हूँ। अंतर-
से लड़कर आप-करने का सिंक्रोनाइजेशन सही
हो तो आप-में विचारों का बेमेल-सा आये। और-
अ-द पर लड़-बुझाना तो बेहानी ही है-है न।
आपसे बहुत बातें करनी हैं। और बहुत-सी
बातों का उत्तर आपकी तरफ से मैं खुद

ही पाता रहा हूँ | कवेले-पन में जब वेम-तुम मेरे
साथ होते हो |

पुष्प समय पूर्व स्वामीनाथजी मोपाल काये
थे | वे एक लम्बे-समय के लिये (शायद दो वर्ष)
कला संग्रहालय के संचालक हो कर मोपाल ही में
रहेंगे | साथ ही निर्मलवर्मा भी मोपाल में गिरामापीठ
के अंतरगत लम्बे-समय के लिये ही मोपाल रहेंगे |
अशोक जी कोरे उन सभी को मैंने अपने स्टूडियो में
आमंत्रित किया था वहाँ अच्छा समय गुजरा | २-३ बड़े
कैनवास जिन पर मैं पान्थ कर रहा था वह भी डूबने
देखे |

ऐसा मामला हुआ है कि मलित कला अकादमी का
रीजनल सेंटर जो मोपाल में होने वाला था, अशोक जी
ने पना कर दिया है, एमारा अपना प्रवेश ही उस
प्रकार की व्यवस्था करने में सक्षम है मेरी कोई
बात अशोक जी से इस बारे में नहीं हुई, उनके घर
भी गया था ~~वे~~ वे दिल्ली गये हैं | मेरे कोरे सचिदा के
विचार से हम जो कर रहे हैं करेगे ही, वह भी होता
तो बेहतर होता क्योंकि वह तो पुरुष रूप से चित्र को
पूर्विकला के लिये अधिक होता, कोरे हमारी ^{एक} एकीकृती
मिली-जुली अधिक होती है | वैसे मेरी अभी सीधी बात
में अशोक जी से नहीं हुई लेकिन निश्चित है डूबने-
किसी कोरे अधिक ^{अच्छी} योजना के अंतरगत ही रीजनल सेंटर
अपने-यहाँ नहीं चला होगा

(तारिखों) आम्बे या बेंगलोर में शो देने के लिये बेहतर
समय भी राह देख रहा हूँ जहाँ भी मिले |

जैने मामी-चौ पुमान

23/2/2007

गगडेव जमान से आगये हैं, शो अच्छा रहा |

— २४४/II/६६ दूध नगर
कदकटा, रोड कोपाल-

२.१०.८१

आदरणीय राजा जी

सादर नमस्कार

आपका पत्र पाकर तो इतनी खुश हूँ कि
बयान नहीं कर सकती-

अपनी पहली इच्छा प्रदर्शनी प्रदेश से
बाहर- कलकत्ता जैसे महानगर में
करने जा रही हूँ इसी में आदर
तो मैं इसी में सारा समय व्यस्त
रहने की वजह से चाहे तो आपको
पत्र नहीं लिख पाई मैं आपकी जीजियेगा

प्रदर्शनी में मेरे नये मंड कोलापाई
लिने में विवाहपरांत किया है
आपकी निमंत्रण पत्र और दोशर को
रही हूँ- प्रदर्शनी का मैं बड़ा इच्छा-
रहा हूँ कि कलकत्ता में मेरे ये चित्र
अपनी जगह बना पाऊँगे या नहीं ?
बहरहाल आपकी प्रोत्साहन व मुक्त-
बुद्धि सारा धैर्य दिया है काम
में कि मैं यही मेरी उपलब्धी है

आपकी शोधकर्ता के सिवाय में मुझे
कोई उत्साह नहीं मिलता दी है मैं
को- पसंद करके काम में कि

आपका मन्त्री हूँ। अब मैं दुःख-
पीडा से पड़ाई करूँ।

आपकी प्रदुर्गति के लिए- मरी गई-
वेद की ओर से लादिके शुभकामनाएं
इस पत्र के जरिये- भेज रही हूँ।
स्वास्थ्य करें।

आपका मित्र -

सिंह

आ/मि/सिंह

મોપાલ
૧૬ ડિસેમ્બર ૧૯૮૧

उद्देशणीय - रजा सा.

уонн,

आपका 9 अप्रैल का पत्र प्राप्त हुआ। हाँ- मैं निश्चित नहीं कर पाया था कि वह पत्र भी आपको पोस्ट करूँ या नहीं, जैसे कि कई और पत्र अपने-अपने अंतर की कमीरता, ~~मैंने~~ मैंने केनी और पुस्तकालय के लम्हों में मिला मिला कर ~~आपकी~~ शर्त और संकोच से गर्म सांसों की तरह सहेज कर रखता रहा। इस बार नहीं रोक पाया और देख से ही लेकिन मैं पोस्ट कर चुका था। शर्मादाँ हैं कि आपको परेशान करा। फिर भी —

आपने गीत समझा " भागवीय-स्वर-पर " बहुत से ऐसे
गायक कोरे कसूर सभ आते हैं जिनका बधा जाना संभव
नहीं होता, कोरे कनकड़ा रचना कोरे भी अधिक पीड़ादायक।
रोक नहीं पाया मैं अपने आपको रिसने से। ऐसी ही
स्थिति में कोरे भी अधिक विचलित हो गया था कदसास
हो होगा शायद कि किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित तो
नहीं हो गया? कंधेदार कोरे गहराई ही गजर काती रही
कसीद कोरे कसीद वहीं कोई सधारा नहीं अपने आपको
खोने का डर अपने लिये नहीं दूसरों के लिये, और फिर
इस बीच न मालूम क्या क्या घटित हुआ कि मैं पूर्णरूप
से आसित हो गया।

७. छली हुई दीवारों को फिर से संभालने की जोशीश की है मैंने, कोर-शायद काफ़याव रहूँ। आपका पत्र-ने एक मजबूत सहारा, दृढ़ इच्छा शक्ति को-विश्वास दिया है। ऐसे गायक वक्ता में।

आपने जो कर रहा हूँ। आपोश, अपने से ही है
बहुत अधिक इतना-इतना कि पर-पड़ने की सीमा
का लगभग अंत ही हो करे नहीं पर-रहा, इसी-से
ही प्रायः नये केनवास पर प्रीज हो जाता हूँ। अंतर-
से लड़कर आप करने का सिंक्रोनाइजेशन सही
हो तो आप में विचारों का बेमेल-सं आये। आँखों-
बंद कर लड़ू-बुझाना तो बेमानी ही है-है न।
आपसे बहुत बातें करनी हैं। और बहुत सी
बातों का उत्तर आपकी तरफ से मैं खुश

ही पाला रहा हूँ | कपिले-पन में जब केवल "तुम" मेरे
साथ होते हो |

बुद्ध समय पूर्व स्वामीनाथजी मोपाल काये
थे | वे एक लम्बे-समय के लिये (शायद दो वर्ष)
काला संग्रहालय के संचालक हो कर मोपाल ही में
रहेंगे | साथ ही निर्मलानी भी मोपाल में गिराफापीक
के अंतर्गत लम्बे-समय के लिये ही मोपाल रहेंगे |
अशोक जी कोरे उन सभी को मैं अपने स्टूडियो में
कामजोत किया था वहाँ अच्छा समय गुजरा | 2-3 बड़े
केनवास जिन पर मैं काम कर रहा था वह भी उद्योग
देखें |

ऐसा मामला हुआ है कि मलिक काला कलादमी का
रीजनल सेंटर जो मोपाल में होने वाला था, अशोक जी
ने मना कर दिया है, इसका अपना प्रेश ही उस
प्रकार की व्यवस्था करने में सक्षम है मेरी कोई
बात अशोक जी से इस बारे में नहीं हुई, उनके घर
भी गया था ~~मैं~~ वे दिल्ली गये हैं | मेरे कोरे सचिदा के
विचार से हम जो कर रहे हैं करोगे ही, वह भी होता
तो बेहतर होता क्योंकि वह तो पुरुष रूप से चित्र को
पूर्विकाल के लिये अधिक होता, कोरे हमारी जो एक्सीविटी
मिली-जुली अधिक होती है | वैसे मेरी अभी सीधी बात
में अशोक जी से नहीं हुई लेकिन निश्चित है उद्योग
किसी कोरे अधिक ^{अच्छी} योजना के अंतर्गत ही रीजनल सेंटर
अपने-यहाँ नहीं पाया होगा

(तारिखों) आम्बे या बेंगलोर में शो देने के लिये बेहतर
समय भी राह देख रहा हूँ जहाँ भी मिले |

जो नामाची-को गुमान

23/2/2007

गामदेव जमान से आगये हैं, शो अच्छा रहा |